आधुनिक पुस्तकालय में सूचना स्त्रोत की उपलब्धता : एक अध्ययन

- रामबिलास सोनी, शोध छात्र (लाइब्रेरी सॉईस), डॉ.सी.वी. रामन् वि.वि. कोटा बिलासपुर (छ.ग.)
- डॉ. संगीता सिंह, विभागाध्यक्ष (लाइब्रेरी सॉईस), डॉ.सी.वी. रामन् वि.वि. कोटा बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश :–

मौंजूदा समय में हमारे देश की युवा शक्ति को अगर ज्ञान, सूचना एवं तकनीकी, प्रोद्यौगिकी हुनर से युक्त कर दिया जाये तो हमारा देश शत प्रतिशत वैश्विक सूचना शक्ति के रूप में उभरकर अपना स्वर्णिम् प्रचम लहरायेगा।

पुस्तकालय मानसिक, बौद्धिक, व्यक्तित्व विकास, सर्वांगीण विकास एवं विचार शक्ति को प्रबल बनाता है। युवा आबादी की सर्वांगीण विकास के लिए पुस्तकालयों का आधुनीकीकरण एवं इलेक्ट्रॉनीकिकरण का होना अत्यंत महत्वपूर्ण है। सूचना युवा क्रांति एवं युवा नवनिमार्ण के लिए प्रत्येक ग्रंथालयों एवं सूचना केंन्द्रो में इलेक्ट्रॉनिक एवं अभासी स्त्रोतो का होना आवश्यक है। इस लेख का मुख्य उद्देश्य युवा सूचना सशक्तिकरण की स्थिति एवं माँग को उजागर करना तथा नवीनतम संसाधन एवं उनका सुझाव को प्रस्तुत करते हुए आयोगो एवं सरकारो का ध्यान आकर्षित कराना है ताकि शिक्षा एवं ज्ञान को सुदृढ़ता प्रदान किया जा सके।

प्रस्तावना :–

इस लेख के अतंर्गत सार्वजनिक, शैक्षणिक एवं विशिष्ट पुस्तकालय के क्षेत्र में हुए अध्ययनों पर विचार करते हुए उनके वर्तमान स्थिति एवं उपयोक्ता सुविधा में प्रकाश डाला गया है। संसाधनो का आधुनीकीकरण एवं यांत्रिकीकरण तथा उपयुक्त सूचना स्त्रोतो के अभाव में तकनीकी ,समाजिकी, आर्थिकी, राजनैतिक, पौढ़ शिक्षा, स्वशिक्षा, औपचारिक, अनौपचारिक एवं वर्तमान पद्धिति पर अधारित शिक्षा का विकास एवं विस्तार सफलता पूर्वक नही किया जा सकता। वर्तमान युग में युवा जगत के लिए ज्ञान एवं सूचना का उचित प्रबंध नही होना तथा इनके अव्यवस्थित विस्फोट के कारण शत प्रतिशत शिक्षित ,सभ्य, ज्ञानयुक्त समाज की कल्पना कठिन सी होती जा रही है। खासकर तब जब कई सारी ग्रंथालय योजनाओं का संचालन एवं व्यवस्थापन सफलतापूर्वक नही हो पाना, बजटिंग, इलेक्ट्रॉनीकिकरण, पुस्तकालय साफ्टवेयर पैकेज एवं प्रशिक्षित कौशलयुक्त कर्मचारी के अभाव में प्रत्येक वर्ग के लोगो तक उनके उपयोगी ज्ञान एवं सूचना का नही पहुँच पाना उसके शिक्षा एवं सर्वंगीण विकास के गतिशीलता के अबोध प्रवाह में रूकावट पैदा करता है। दूसरी ओर हमारे ग्रंथालयों एवं सूचना केन्द्रो का अव्यवस्थित होना, पुस्तकालय कार्यो के प्रति उदासीनता एवं अच्छी स्थिति नही होने के करण इनेक स्त्रोतो एवं सेवाओं में प्रश्न खडा होना लाजिमी है अर्थात हम कह सकते है कि इनके व्यवस्थापन, संचालन ,क्रियान्वयन में नवीनीकरण, स्वचालीकरण एवं उचित सूचना स्त्रोतो के अभाव में सभ्य, शिक्षित एवं ज्ञानयुक्त समाज की कल्पना नही किये जा सकते।

आज के आधुनिक एवं प्रौद्योगिकी के युग में ज्ञान एवं सूचना को मानव के सर्वांगीण विकास का एक सशक्त–गतिशील, मार्गदर्शक एवं कौशलात्मक साधन माना गया है। ज्ञान एवं सूचना के अभाव में मानव समाज का विकास एवं प्रगति " दूर के ढ़ोल सुहाने के समान " प्रतीत होता है इनके बिना सभ्य एवं विकसित समाज की कल्पना नही कि जा सकती है ज्ञान एवं सूचना को शक्ति की उपमा दी गयी है। जो समाज एवं राष्ट्र सूचना एवं ज्ञान के क्षेत्र में सशक्त एवं सम्बंद्ध है वै सर्वाधिक विकसित और सम्पन्नशाली राष्ट्र है। भारतीय समाज की उन्नति एवं वैज्ञानिक आयाम के निर्माण के लिए एक मात्र

साधन शिक्षा है जिनके द्वारा ज्ञान एवं सूचना को उपलब्ध कराकर जन–जीवन एवं समाज को उन्नतशील बनाने में सहयोग प्रदान करता है। इनके लिए ग्रंथालय का ई–लाईब्रेरी होना आवश्यक है ताकी ज्ञान एवं सूचना का निर्वध रूप से प्रवाह होता रहे।

विभिन्न ग्रंथालय के आयाम एवं सेवाएँ :–

सार्वजनिक ग्रंथालय

डॉ रंगनाथन के अनुसार " सार्वजनिक पुस्तकालय के कार्य शैक्षणिक, सूचनात्मक, राजनैतिक, आर्थिक, प्रोद्यौगिकी तथा पुराविद है अर्थात सार्वजनिक पुस्तकालय अपने शैक्षणिक कार्यो के द्वारा जन साधारण" की शैक्षणिक अभिरूचि की पूर्ति करता है। एवं उसे विकसित करता है उनकी बौद्धिक जिज्ञासा की पुष्टि सूचनात्मक कार्य के माध्यम से करता है। राजनीतिक कार्यो के अंतगर्त वह स्वस्थ जनमत का निर्माता है। आर्थिक कार्यो के अंतर्गत विकसित तकनीक व उत्पादन की नवीन विधियों के सम्बध में जनता को जानकारी प्रदान करता है। उनकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करता है सांस्कृतिक, सभ्यता, कला व ज्ञान के अपरिमित भण्डार से परिचित कराता है। पुराविद् कार्यो के अंतर्गत प्राचीन विभिन्न साहिय, ज्ञान, कला एवं सभ्यता व संस्कृतिक से सम्बंधित साहित्य चित्र श्रव्य–दृश्य व चलचित्र उपलब्ध कराता है।

इनके आयाम एवं सेवाएँ

- इनके द्वारा स्वशिक्षा एवं स्वपाठन जैसे रचनात्मक गतिविधियों को तीव्र गति से सुविधा एवं अवसर प्रदान किया जा सकता है।
- इनके द्वारा नागरिक बोध, कर्तव्यपरायण, अनुशासनशील, और ज्ञानबोध एवं जागृति को उच्चकोटि प्रदान किया जा सकता है।
- यह प्रत्येक जनमानस के लिए शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं बौद्धिक गतिविधियो का समयोजन करता है।
- यह महान् विद्वानो, कवियो, शिक्षाविदो एवं वैज्ञानिको के साहित्य लेख को सुगमता से अध्ययन हेतु प्रोत्साहित करता है।
- यह प्रत्येक अवस्था के पाठक के लिए मनोरंजनात्मक साहित्य एवं ज्ञान और कौशल जरूरतो को पूरा करता है जिससे बौद्धिक जिज्ञासा की पूर्ति होती है।
- इनके द्वारा हम भारतीय लोकतंत्र व विभिन्न राजनैतिक दलो की उद्देश्य, कार्यो एवं नीतियों तथा भारतीय कानून एवं सविधान के अनुच्छेदो का सामान्य व विशिष्ट जानकारी ले सकते है।
- केन्द्र एवं राज्य सरकार के विभिन्न योजना एवं जनहित कार्यो की उपलब्धता जैसे मनरेगा, डिजीटल इंडिया, मेक इन इंडिया, स्टार्टअप इंडिया एवं युवा सूचना क्रांति सम्बंधि अधारभूत जानकारी को उपलब्ध करना है।
- राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय समाचार पत्र व पत्रिकाएँ एवं विभिन्न विषयो सम्बंधित प्रलेखो को उपयोक्ता को उपलब्ध करना।

शैक्षणिक पुस्तकालय

शिक्षा सीखने की एक प्रक्रिया है जो मानव को हर स्तर पर समर्थवान बनाती है इस प्रक्रिया में विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय अहम् भूमिका निभाते है। किसी भी शिक्षण संस्थान को अपने

उद्देश्यो की प्राप्ति में उस संस्था की पुस्तकालय की अहम् भूमिका होती है। ग्रंथालय को शिक्षण संस्थान के हृदय रूपी धमनी माना गया है जो शिक्षा रूपी रक्त–चाप को संचालित करता है। विद्यालय छात्रो के व्यक्तित्व विकास में सहायता प्रदान करता है विद्यालय के माध्यम से छात्र समाज और राष्ट्र से परिचित होने लगते है और समझने लगते है। सबके विकास एवं कल्याण का आधार मानवता है। कर्तव्य पालन ,सहयोग और प्रेम के व्यवहार से इस मानवता का दर्शन होता है अतः छात्रो में कक्षा शिक्षा तथा पुस्तकालय शिक्षा के माध्यम से इन तीनो गुणो को बढ़ाया जा सकता है। इस प्रकार के पुस्तकालय में विषय व क्षेत्रो से सम्बंधित ग्रंथ, प्रलेखो तथा विभिन्न सेवाओं का उपयोग कर अध्ययन व शोध कार्यो को विश्लेषित एवं वर्गीकृत किया जा सकता है अर्थात शैक्षणिक पुस्तकालय छात्रो के मानसिक स्थिति का कठोरतम् परिक्षण कर उनके चहुमुखी विकास करता है।

आयाम एवं सेवाएँ

- पठन पाठन के लिए उन्हे जागरूकता एवं रोचकता प्रदान करता है ।
- बाल छात्रों को साक्षर व शिक्षित एवं युवा में सुप्त बौद्धिक शक्तियो को जागृत और विकसित करता है
- शिक्षार्थियो में स्व–अध्ययन की प्रवृति को बढाता है।
- मौलिक रूप से विचार करने के हेतु उनेंक वैचारिक क्षेत्र को विस्तृत करता है।
- छात्रो में सामान्य ज्ञान , अच्छे विचार एवं वैज्ञानिक अभिवृत्ति का विकास करता है।

विशिष्ट पुस्तकालय

डॉ. डी. बी. आरनोल्ड ने विशिष्ट पुस्तकालय की परिभाषा इस प्रकार दी है कि "ये वे पुस्तकालय है जो एक प्रकार के विषय तथा एक ही प्रकार के उद्देश्य के लिए स्थापित किये जाते है ऐसे पुस्तकालय अपने विशिष्ट विषय अथवा विषयो पर पाठ्य सामग्री उपलब्ध करवाते है। विशिष्ट पुस्तकालय किसी विशाल विश्वविद्यालय अथवा पुस्तकालय से जुडे हो सकते है इनका विषयानुसार विकास किया जाता है इनसे जुडे वे प्रलेखन एवं सूचना केन्द्र आ जाता है जो विषयो पर पाठ्य सामग्री एकत्रित करते है।"

विशिष्ट पुस्तकालयों की पाठ्य सामग्री संग्रह अन्य पुस्तकालयों से भिन्न होती है जैसे पाण्डुलिपियॉ, नक्से, दृश्य–श्रव्य सामग्री, माइक्रोफॉर्मस, विडियो टेप रिकार्डिंग्स, स्लाईडस, प्रतिवेदन, पेटेन्टस् इत्यादि पाठ्य सामग्री की संख्या पुस्तको की अपेक्षा अधिक होती है। मेडिकल, इंजिनियरिंग, बिजनेस पुस्तकालय एवं टेक्नीकल लाइब्रेरी, औद्योगिक पुस्तकालय को भी विशिष्ट लाइब्रेरी कहॉ जाता है। इस पुस्तकालय में कार्यरत पुस्तकालय कर्मियों को पेटेन्ट, सर्चरस, एब्सट्रेक्टरस, केटलॉगर्स, ट्रॉसलेटरस इत्यादि नामो से जाने जाते है। विकासशील देशो कि अपेक्षा विकसित देशो में इस पुस्तकालय की स्थिति अच्छी है।

आयाम एवं सेवाएँ

- यह सूचना एवं प्रलेखन सेवा प्रदान करता है जिनके द्वारा संस्था के सदस्य अपनी रूचि के क्षेत्र में विशिष्ट विकासो से परिचित होते है।
- यथा तथा सार्वांगपूर्ण और तत्काल सूचना प्रदान करके उपयोगकर्त्ताओं का समय बचाता है।
- उपयोगकर्त्ताओं को संतुलित संग्रह एवं श्रेष्ठ सेवा प्रदान करके प्रेरणा एवं प्रोत्साहन प्रदान करता है।

- यह पुस्तकालय चयनात्मक स्त्रोतो को उपलब्ध कराता है ताकी शोध कार्य का सतत् विकास किया जा सके।
- यह उपयोगकर्त्ता के सूचना से सम्बंधित जानकारी के लिए विभिन्न प्रकार के वर्गीकरण, कैटलॉग, अनुक्रमाणिका, संदर्भीकरण एवं सारांशीकरण सेवाएँ प्रदान करता है।
- ये पुस्तकालय टेलीफोन, पोस्ट, ई–मेल सेवा के अतिरिक्त जागरूकता सेवा और चयनित प्रसार सेवा प्रदान करता है।

डिजिटल ई–संसाधन शिक्षा एवं युवाओं के लिए सशक्तिकरण का माध्यमः–

आज का युग ज्ञान सृजन एवं आदान–प्रदान का युग है आज के युग में जितनी तेजी से समस्याएँ उभर कर सामने आ रही है। उतनी ही तेजी के साथ वैज्ञानिक समुदाय उन समस्याओं को हल करने में प्राणमगना है इस इलेक्ट्रॉनिकी एवं प्रौद्योगिकी युग में शोध एवं विकास गतिविधियों को करने के लिए जो परम सहायक के रूप में साधन मिलता है वह कम्प्यूटर, ई–स्त्रोत एवं इंटरनेट है। यह उपकरण मात्र ज्ञान व गणना ही नही करता अपितु उससे कही अधिक मानव जीवन में सहायता प्रदान करता है कम्प्यूटर, ई–स्त्रोत एवं इंटरनेट मात्र प्राकृतिक विज्ञानो एवं सामाजिक विज्ञानो के क्षेत्रो में शोध के लिए उपयोगी नही है अपितु पुस्तकालय विज्ञान के क्षेत्र में भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता जा रहा है।

ब्रिटेन के एक ताजे सर्वेक्षण के अनुसार भारत के प्रतिभाएँ भले ही उच्च स्थान रखता हो लेकिन दुनिया के 150 शीर्ष शिक्षण संस्थानो में भारत के किसा भी संस्थान एवं विश्वविद्यालय को स्थान नही मिल पाई है इनका रैंकिंग घटकर 152 हो गई है। उसी प्रकार नेशनल इम्प्लॉयबिलिटी ताजे रिपोर्ट के अनुसार 80 प्रतिशत इंजीनियरिंग एवं उच्च शिक्षा के छात्र कौशल, ज्ञान एवं हुनर उक्त नही है।

भारत सरकार इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी विभाग के अंतर्गत छत्तीसगढ़ राज्य में कार्यरत राज्य ई–गवर्नेस डिविजन के प्रयोजन एवं बिलासपुर वि.वि. की राष्ट्रीय सेवा योजना प्रकोष्ठ के संगठन व्यवस्था में डिजिटल इंडिया पर एक दिवसीय वि.वि. स्तरीय कार्यशाला का उद्घाटन 24 अगस्त को कुलपति डॉ.जी.डी. शर्मा ने किया। उन्होनें कहॉ कि डिजिटल इंडिया का कार्यक्रम युवाओं को सशक्तिकरण की दिशा में एक कदम है। उन्होने पूरे देश के अलग–अलग राज्यों तथा विश्व के अलग–अलग देशों की डिजिटल लिट्रेसी की तुलना करते हुए कहा कि कोरिया, जापान, चीन इत्यादि देशों के युवाओं की कम्प्यूटर एवं डिजिटल एवेयरनेस जहा 50 से 75 प्रतिशत के बीच है वही भारत में मात्र 32 प्रतिशत लोग डिजिटल स्किल्ड हैं।

पुस्तकायल एवं सूचना केन्द्रों में इलेक्ट्रॉनिक स्त्रोत व ग्रंथालय साफ्टवेयर का अनुप्रयोगः–

- **इंटरनेट एवं कम्प्यूटर :–** सूचना प्रदत्त विद्वानो द्वारा निरंतर इस बात की आवश्यकता महसूस की जा रही है कि इंटरनेट पर उप्लब्ध संसाधनों का ग्रंथपरक अभिलेख तैयार किया जाएँ और इस अभिलेख को ऑन लाइन सूची के माध्यम से उपयोगकर्ताओं को उपलब्ध कराएँ जाएँ। यह पुस्तकालय में उपलब्ध संसाधनो के सूचीकरण जैसा ही है । इनके लिये ओ. सी. एल. के द्वारा एक मैन्युअल जिसका शीर्षक कैटलॉगिंग इंटरनेट रिसोर्स : ऐ मैन्युअल एण्ड प्रैक्टिकल गाइड को विकसित किया। इस परियोजना का विकास सयुक्त राज्य के शिक्षा विभाग द्वारा सहायता प्राप्त परियोजना शीर्षक "buiding a cataiogue of internet resources" सहायता के लिए विकसित किया गया । इस हेतु जो मार्गदर्शिका बनाई गई जिसमें ए. ए. सी. आर–

संस्करण 2 1988 और 1993 है इस में इलेक्ट्रॉनिक संसाधनो के लिए ISBD-ER and OCLC मार्क का उपयोग किया गया। विस्तृत जानकारी के लिए इस वेबसाइट को देख सकते है।

http://www.oclc.org/oclc/man/925cat/to c.htm.

- **इंट्रानेट** :– इंट्रानेट एक छोटा नेटवर्क है जो कि किसी संगठन में काम करता है इसमें कम्प्यूटर आपस में इंटरनेट के माध्यम से एक–दूसरे के साथ जोड़े जाते है। जो किसी भी संगठन के दैनिक कार्यो में मदद करता है। इन में संग्रहित सूचना सामान्य उपयोगकर्ता के लिए उपलब्ध नहीं होती है। इस सूचना का प्रयोग केवल संगठन के अंदर किया जा सकता है।
- **एक्स्ट्रानेट** :– एक्स्ट्रानेट इंटरनेट और इन्ट्रानेट के मध्य में विराजमान है। इसमें यह सुविधा होती है कि कुछ प्रामाणिक उपयोगकर्ता बेवसाइट पर सुरक्षित क्षेत्र तक पहुॅच बना सकते है जो कि सामान्य उपयोगकर्ता के लिए प्रतिबंधित होती है। इसमे पहचान समेत यूजर आई.डी. बताना होता है।
- **ई–शासन** :– ई शासन भारत सरकार का एक महत्वपूर्ण सामाजार्थिक विकास योजना है। जिनके द्वारा ज्ञान एवं सूचना प्रबंधन के क्षेत्र में अमूल–चूल परिवर्तन करने के लक्ष्य है। क्योंकि लोकतंत्र में सरकार का मुख्य उद्देश्य मानवमात्र के विकास करना है। ई–शासन उचित समय पर उचित व्यक्तियों तक उचित माध्यमो से सूचना पहुॅचाना है इस वैश्विकरण एवं सूचना विस्फोट के युग में ई–शासन ही लोगो तक सूचना पहुॅचाने का विश्वसनीय, सरल, सुगम, गतिशील, पारदर्शी, प्रभावकारी एवं तीव्रता के साधन है।

  http://www.pisgroup.biz

  http://www.digitalgovernance.org
- **ई–लाइब्रेरी** :– इलेक्ट्रॉनिक लाइब्रेरी ऑनलाईन सूचनाओं का संसार है। इसमें हम दुनिया भर में हो रही (विभिन्न तकनीकि क्षेत्र, शैक्षणिक एवं चिकित्सा क्षेत्र) शोध कार्यो व बुक इत्यादि को असानी से अपने आंखो में देख सकते है इस क्षेत्र के लाइब्रेरी सहयोगी संगठन संसाधन सभागिता के अंतर्गत अपनी सूचना का अदान–प्रदान करता है यह शोध, विज्ञान, चिकित्सा एवं प्रौद्योगिकि के क्षेत्र में अधिक देखा गया है।

  www.netlibrary.com

  http://www.dkagencies.com
- **ई–बुक, ई–जॉनर्ल** :– ई–बुक का प्रारंभ 1980 के दशक में हुआ जब मिशिगन विश्वविद्यालय के पास ann arbor पहला borders book store खोला। सबसे पहले brown university अमेरिका के anderies van dam ने इलेक्ट्रॉनिक बुक पद को बनाया वस्तुत : ई–बुक्स ग्रंथों का सही मुद्रित स्वरूप है जो इलेक्ट्रॉनिक स्वरूप में होता है और जिसे कम्प्यूटर य अन्य पठनीय समान मशीन कि सहायता से पढ़ा जा सकता है यह पी.डी.एफ., एक्स.पी.एस. एवं एच.टी.एम.एल. फाइल के रूप में होते है। ये चारो सुक्ष्म सूचना के रूप में होते है। यूजर अपने आवश्यकता के अनुसार किसी भी रूप में प्राप्त कर सकते है।

  1. downloadable e-book, 2. web-accessible e-book

  3. e-book readers, 4. print on demand book

  e-book, http://www.cs.cmu.edu/web/book titles.html

http://www.webhead.com/nk/journal.html

- **ई–न्यूज** :– ई समाचार पत्र नवीनतम सूचनाओं पर घटित समाचार पत्र है। आज इंटरनेट पर सारे प्रमुख समाचार पत्र उपलब्ध है उपयोक्ता इन समाचार पत्रों को इंटरनेट पर देख सकता है। ई–न्यूज वर्तमान में घटित घटनाए होती है जिसे पठनीय मशीन द्वारा पढ़ा जा सकता है।

  http://www.aytimes.com

  http://www.the.times.co.uk.

  http://www.india.today.com

- CAS/SDI :– जागरूक सूचना सेवा के अंतर्गत एक निश्चित समय में प्रकाशित हुऐ प्रलेखो को सूचीबद्ध करना है इनमें न तो किसी विशिष्ट विषय के आधार पर तथा नही किसी विशेष उपयोक्ता की अभिरूचि को आधार मानकर प्रलेखो का चयन किया जाता है अपितु सामान्य अभिरूचि वाले उपयोक्ता की ज्ञान पिपासा की परिपूर्ति के लिए सामायिक एवं नवीनमतम प्रलेखो एवं सूचनाओं का चयन किया जाता है। जबकी SDI में उपयोक्ता की अभिरूचि प्रोफाइल पर सूचना आधारित होता है। यह प्रोफाइल उपयोक्ता की अभिरूचि से सम्बंधित किसी विशेष क्षेत्र या विशिष्ट विषय को अभिलक्षित करता है
- **डेलनेट** :– डेवलपिंग लाइब्रेरी नेटवर्क का संक्षित नाम है जिसे भारत का प्रथम पूर्ण संचालित एवं पंजीकृत पुस्तकालय नेटवर्क होने का गौरव प्राप्त है यह निसात द्वारा प्रायोजित 1988 तथा एक पंजीकृत लाइब्रेरी के रूप में 1992 में कार्य आरम्भ किया।

  डेलनेट अपने सहयोगी पुस्तकालय को इंटरनेट अभिगम की सुविधा, सी.सी.एफ. एवं मार्क प्रारूप में पुस्तको की संघीय प्रसूची को उपलब्ध कराना, विशिष्ट भारतीयो की सूची तैयार करना, सी.डी. एवं डी.वी.डी. रूप में डेटाबेस की सुविधा, डेलसर्च द्वारा ई–मेल की सुविधा।
- **इंफ्लिबनेट** :– इंफोर्मेशन एण्ड लाईबेरी नेटवर्क का संक्षिप्त नाम है। पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के क्षेत्र में यह एक राष्ट्रीय सहकारी नेटवर्क है। इस नेटवर्क का प्रारम्भ पुणे विश्वविद्यालय के खगोल विज्ञान एवं खगोल भौतिकी विभाग में एक परियोजना के रूप में किया गया। सन् 1991 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इस परियोजना को पुस्तकायल एवं सूचना नेटवर्क के रूप में विकसित करने का निश्चय किया। इस नेटवर्क का मुख्यालय गुजरात विश्वविद्यालय,अहमदाबाद में स्थापित किया गया। वर्तमान में इस नेटैवर्क को एक स्वायत्तशासी संस्था का दर्जा प्राप्त हो गया है। इस नेटवर्क में भारत के विश्वविद्यालयों तथा अनुसंधान एवं विकास केन्द्रों के पुस्तकालयों को एक साथ कम्प्यूटर के माध्यम से इस प्रकार संबद्ध किया जा रहा है जिससे सभी प्रतिभागी पुस्तकालयों के संसाधनों की सहभागिता को बढ़ावा मिल सके। अतःयह कहा जा सकता है कि यह एक बहुमुखी, कार्योन्मुख एवं सेवा नेटवर्क है।
- **सीडीएस/आईएसआईएस** :– सीडीएस/आईएसआईएस का पूरा रूप है कंप्यूटराइज्ड डाक्यूमेंटेशन सिस्टम/इंटेग्रेटेड सेट ऑफ इन्फोर्मेशन सिस्टम। यह मेनू संचालित है तथा सूचना के भण्डारण, पुनर्प्राप्ति एवं संप्रेषण के लिए सशक्त सॉफटवेयर है। यूनेस्कों के ,ऑफिस ऑफ इन्फोर्मेशन प्रोग्राम्स एंड सर्विसेज के सॉफ्टवेयर डेवलेपमेंट एंड एप्लीकेशन डिवीजन ने इसे विकसित किया है। भारत में इस सॉफटवेयर का वितरण भारत सरकार का एक अंग निसात कर रहा है।

- **लिबसिस :–** लिबसिस सॉफटवेयर को दिल्ली के लिबसिस कार्पोरेशन नामक एक निजि एजेन्सी ने विकसित किया है। यह एक मेनूआधारित पैकेज है और इसके आधार पर पुस्तकालय के सभी गृहकार्यों तथा इनकी सेवाओं को कम्प्यूटर के आधार पर पूरा किया जा सकता है । लिबसिस में समस्त कार्यो के लिए मेनू उपलब्ध है जैसे एक्विजीशन (अधिग्रहणकार्य), कैटेलॉगिंग (प्रसूचीकरण), सर्कुलेशन (मेम्बरशिप रिकार्ड), सिरियल कंट्रोल (पत्र–पत्रिकाओं की खरीद एवं नवीन प्रवीष्टी), आर्टिकल्स इंडेक्श (एसडीआई), ओपेक (ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस कैटेलॉग) इत्यादी।

निष्कर्ष

मानव जीवन आवश्यकताओं एवं परिकल्पनाओं का जीवन है। जीवन के परिसंचालन के लिये। इन्हे अनेकों ज्ञान एवं सूचनाओं की आवश्यकता होती है इन्ही सूचनाओं को पहुॅचाने के लिए एक माध्यम की जरूरत है जो प्रत्येक लोगो तक सूचनाओं को निर्वध रूप से पहुॅचा सके जिससे शिक्षा, ज्ञान एवं कौशल का सतत् विकास किया जा सके। इनके लिए प्रत्येक पुस्तकालय का इलेक्ट्रॉनीकिकरण करना जरूरी है प्रत्येक सूचना एवं ज्ञान के सुगम संचालन के लिये केन्द्र सरकार, राज्य सरकार, यूजीसी एवं स्थानीय शासन को पुस्तकालय प्राधिकरण के लिए एंक निश्चित बजट निधि देनी चाहिए। सूचना संचार एवं प्रौद्योगिकी के युग में प्रत्येक स्तर में पुस्तकालयों का इलेक्ट्रॉनीकिकरण होना जरूरी है। यह प्रत्येक अध्येता, विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों की जिज्ञासा व ललक की पूर्ति के लिये एक महत्वपूर्ण वरदान कही जा सकती है ई–सूचना स्त्रोतो एवं पुस्तकालय सॉफ्टवेयर ही लोगो तक सूचना पहुॅचाने का विश्वसनीय, सरल, सुगम, गतिशील, पारदर्शी, प्रभावकारी एवं सशक्त संसाधन है।

आज इस सूचना संचार प्रौद्योगिकी एवं वैश्वीकरण के युग में इलेक्ट्रॉनिक रुप में सूचना प्रलखो का संग्रह पुनार्प्राप्ति तथा सम्प्रेषण के लिए सुलभ एवं व्यवस्थित किये जाये। आज के वर्तमान परिदृश्य में ग्रंथालय को सूचना हाब विश्वविद्यालय के रुप में संज्ञा दिया गया है इस संज्ञा को सही परिभाषित एवं उचितढ़ग से क्रियान्वित करने के लिए वर्तमान में क्लिक जोन लाइब्रेरी की आवश्यकता महसूस होता है। जहॉ उपयोक्ता स्वचालित इन्फोर्मेशन गणक मशीन से अपना उपयोगी सूचना इलेक्ट्रॉनिक रुप में कुछ ही क्षणों में प्राप्त कर सके। ई–इन्फोर्मेशन एक विश्वसनीय, सरल, गतिशील, प्रभावशाली, पारदर्शी माध्यम एवं साधन है अर्थात ग्रंथालय में e-virtuality करण केन्द्र की स्थापन करने से है इसके लिए केन्द्र सरकार, राज्य सरकार एवं UGC को आगे आना होगा ताकी आने वाले पीढ़ी को कागजी ज्ञान के बोझ से मुक्त कर इलेक्ट्रॉनिकी टेक्नीकली, प्रौद्योगिकी तकनीकि, वैज्ञानिकी, विकास सूचक, गुणात्मक, ज्ञानवर्धक, सूरुचिपूर्ण सूचना का जीवांत रुप में दर्शन कराया जा सके।

सुझाव

- वर्तमान में प्रकाशनो की आधिकता तथा पुस्तकों व प्रलेखों के मूल्यों में वृद्धि के कारण उपयोक्ता को उचित सूचना प्रदान करने में कठिनाइयॉ होती है इसलिए शासन को इलेक्ट्रॉनिक पुस्तकालय की स्थापना के लिए उचित कदम उठाना चाहिए।
- पुस्तकालय स्त्रोतो के द्वारा बौद्धिक, साहित्यिक एवं वैज्ञानिक ज्ञान अभिवृद्धि के लिए राष्ट्रीय पुस्तकालय से लेकर पंचायत पुस्तकालय एवं विश्वविद्यालय पुस्तकालय से लेकर विद्यालय पुस्तकालय का निर्माण एवं विकास करना चाहिए जिससे उपयोक्ता के व्यक्तिगत रूचियों,

प्रयोजनाओं तथा विविध सहायक कार्यक्रमों की सफलता के लिए समृद्ध तथा व्यवस्थित करने के लिए इलेक्ट्रॉनिक पुस्तकालय आवश्यक है।

- आज के बदलते परिवेश एवं ज्ञान अर्जन के विविध रूप को देखते हुए एवं विभिन्न सूचना स्त्रोतो की बढ़ती मांगों को देखते हुए यह आवश्यक हो गया है कि प्रत्येक क्षेत्रों में इलेक्ट्रॉनिक स्त्रोतो की नितांत आवश्यक है इसके द्वारा शिक्षा एवं साक्षरता को अविरल बढ़ाया जा सकता है।
- राष्ट्रीय स्तर से लेकर पंचायत स्तर तक एवं विश्वविद्यालय स्तर से लेकर विद्यालय स्तर तक पुस्तकालय नेटवर्क का विकास किया जाना चाहिए इससे शिक्षा सामाजिक, आर्थिक एवं प्रौद्योगिकी गतिविधियों के क्रियाकलाप को बढ़ावा दिया जा सकता है।
- प्रत्येक शैक्षणिक, सार्वजनिक एवं विशिष्ट पुस्तकालय का इलेक्ट्रॉनिकरण, प्रशिक्षित कर्मचारी के भर्ती, पुस्तकालय बजट का विशेष प्रावधान होना चाहिए एवं सूचना सहभागिता के लिए सूचना संस्थान एवं संगठन एवं केंन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार यूजीसी को आगे आना चाहिए। इससे प्रत्येक अध्येता को उनके माँग के अनुसार पाठय सामाग्री उपलब्ध कराया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथः–

1. डॉ. बी. के शर्मा, डॉ. डी. वी. सिह, डॉ. यू. एम. ठाकुर एवं डॉ. पी. के. सिह(2015) – "सूचना स्त्रोत उपयोक्ता प्रणाली सेवाएँ एवं प्रोद्योगिकी", वाई के पब्लिशर्स आगरा पृष्ठ 1–109
2. डॉ. बी. के शर्मा, एवं डॉ. यू. एम. ठाकुर,(2011) –" पुस्कालय, सूचना विज्ञान एवं सूचना प्रौद्योगिकी : विवेचनात्मक अध्ययन", वाई के पब्लिशर्स आगरा भाग एक एवं दो
3. डॉ शंकर सिह(2011) – " सूचना संचार प्रौद्योगिकी : इंटरनेट तथा सूचना समाज ", इ.एस. एस.पब्लिकेशन दिल्ली पृष्ठ 167–193
4. डॉ. अरविन्द कुमार शर्मा (2008) – "शोध प्रविधियॉ एवं सूचना प्रौद्योगिकी", प्रथम प्रकाशन
5. शर्मा, अरिविंद शर्मा (2008)–" सूचना, सम्प्रेषण और समाज" ई.एम.एस.पब्लि. दिल्ली, संस्करण
6. लला ,सी एवं कुमार (2001)–" प्रलेखन एवं सूचना विज्ञान भाग 2" ई.एस.एस. प्रकाशन, दिल्ली
7. शर्मा एवं राजीव (1990) –" कम्प्यूटर :आधुनिक विज्ञान का वरदान" राजपाल एंड संस्, नई दिल्ली
8. सिह एवं दीप (1997–98) –" डिजीटल ग्रंथालयों में नवीनतम सूचना सेवाओं का प्रबंधन ग्रंथालय विज्ञान"
9. त्रिपाठी एवं प्रो. एस. एम. (1997) –" प्रलेखन एवं सूचना, सेवाएँ तथा नेटवर्क" भागरा वाई.के. पब्लिशर्स